International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

जहाँगीर के काल के विदेशी यात्रियों का इतिहास में योगदान – एक अध्ययन

अमित कुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

कीर्ति रावत

छात्रा, MA, इतिहास, (द्वितीय वर्ष) देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

शोध संक्षेप

भारत पर प्राचीन समय से ही विदेशी आक्रमण होते रहे हैं। इन विदेशी आक्रमणों के कारण भारत की राजनीति और यहाँ के इतिहास में समयसमय पर काफ़ी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। भले ही भारत पर- यूनानियों का हमला रहा हो या मुसलमानों का या फिर अन्य जातियों का, अनेकों विदेशी यात्रियों ने यहाँ की धरती पर अपना पाँव रखा है। इनमें से अधिकांश यात्री आक्रमणकारी सेना के साथ भारत में आये। इन विदेशी यात्रियों के विवरण से भारतीय इतिहास की अमूल्य जानकारी हमें प्राप्त होती है। मुगलों का काल इतिहास लेखन की दृष्टि से बहुत ही समृद्ध काल रहा है। इसमें विदेशी यात्रियों का बाहुल्य रहा है। जहाँगीर व शाहजहाँ के काल में अनेक विदेशी यात्री भारत आये जिन्होंने मुग़ल काल व तत्कालीन भारत के बारे में अमूल्य ऐतिहासिक सूचनाएं प्रदान की है। मेरे इस रिसर्च पेपर का उद्देश्य है कि उन ऐतिहासिक योगदानों को यहाँ प्रस्तुत करना।

भूमिका

बाबर और हुमायूँ के समय में किसी विदेशी यात्री के भारत आने का कोई उल्लेख नहीं मिलता. मूलतः विदेशी यात्रियों के आने का क्रम अकबर के समय शुरू हुआ । अकबर के काल के प्रमुख विदेशी यात्रियों के नाम हैं फादर मोंसेरोट, फादर थॉमस स्टीफेंस, जॉन न्यूबरी, विलियम लीड्स, स्टोरी लेकिन इन सबमे महत्वपूर्ण था रॉल्फ फिंच जिसने आगरा और फतेहपुर सीकरी का बहुत ही रोचक वर्णन किया है । आगे आने वाले तमाम यूरोपीय यात्री यूरोप से अकबर के शासन के लिए चले थे लेकिन जब भारत पहुंचे तो उन्हें ज्ञात हुआ की अकबर का देहावसान हो चुका है । इनमे पहला यात्री था विलियम हार्किंस ।

विलियम हार्किंस (1608-1611 ई.)

यह ईस्ट इण्डिया कंपनी का कर्मचारी था । यह सूरत में एक अंग्रेज फैक्ट्री स्थापित करने के उद्देश्य से जेम्स प्रथम के राजदूत के रूप में मुग़ल सम्राट अकबर के नाम पत्र लेकर जहाँगीर के दरबार में आया । वह हेक्टर नामक जहाज से सूरत आया । सूरत उतरने वाला वह पहला अंग्रेज कप्तान था । वह जहाँगीर से फारसी भाषा में बात करता था और तुर्की भी जानता था । जहाँगीर उससे इतना प्रभावित था कि उसे शराब पार्टियों में भी ले जाता था । 3 वर्षों के प्रयास के बाद उसने सूरत में फैक्ट्री स्थापित करने के लिए अनुमति प्राप्त कर ली लेकिन पुर्तगालियों के षड्यंत्र के कारण उसकी अनुमति वापस ले ली गयी । जहाँगीर ने हार्किंस को 400 का मनसब व फिरंगी खां/ इंग्लिश खा की उपाधि दी । उसका वर्णन जहाँगीर का प्रत्यक्ष विवरण है और उसने भारत के उन्नत व्यापार व वाणिज्य के रूप में लिखा है । वह लिखता है – भारत चांदी के मामले में बहुत समृद्ध है। सभी देशों की चांदी यहाँ आती तो है लेकिन यहाँ से जाती नहीं।

विलियम फिंच (1608 ई.)

यह होकीन्स के साथ ही सूरत पहुंचा । इसने भारत के अनेक शहरों व 3 प्रमुख व्यापारिक मार्गों के विषय में लिखा है -सूरत-आगरा मार्ग , आगरा- अहमदाबाद मार्ग , लाहौर- काबुल मार्ग । इसने लाहौर को पूर्व का सबसे बड़ा नगर बताया है , बुलंद दरवाजा को वह दुनियां का सबसे ऊँचा व भव्य दरवाजा बताया है । उसने रोहतास जेल में आजीवन कारावास भुगत रहे कैदियों के विषय में भी लिखा है कि कोई बिरला ही वहां से जिन्दा बाहर निकलता था, यह एक मात्र यात्री है जिसने अनारकली की दन्त कथा का उल्लेख किया है

जोर जुरदा (1608-17 ई.)

जहाँगीर काल में आने वाला अंग्रेज यात्री जिसने मुग़ल इतिहास के अनेक कीमती दस्तावेज छोड़े थे ।

निकोलस डाउटन (1608-15 ई.)

यह एक बेड़े का कप्तान था जो सम्राट जेम्स का मुग़ल बादशाह के नाम पत्र लेकर भारत आया था लेकिन वह गुजरात के मुग़ल सूबेदार मुकर्रब खां के शत्रुता के कारण आगरा नहीं जा सका । वह अपने बेड़े के साथ इंग्लैण्ड लौट गया ।

निकोलस विथिन्गटन (1612 – 1616 ई.)

यह कप्तान बैस्ट का नौकर था । इसने मुग़ल काल में सूरत में नौकरी कर ली । 1614 ई. में उसे नील के व्यापार में पूंजी निवेश के लिए जॉन मिडेनहोल के कार्यवाहियों के बारे में रिपोर्ट लाने के लिए आगरा भेजा गया । इसका विवरण "ट्रेक्टर" के नाम से 1735 ई। में लन्दन में प्रकाशित हुआ । उसके अनुसार अहमदाबाद लन्दन जितना बड़ा है जहाँ कपडे व दवाओं का निर्माण होता था । इसने अजमेर को अदभुत शहर बताया है जिसके जैसे दूसरा कोई शहर न देखा गया और न ही सुना गया । इसने राजपूतों में सती प्रथा का भी वर्णन किया है । इस प्रथा की शिकार होने वाली स्त्रियों के विषय में लिखता है – वे चिता के कष्ट को इतनी सहनशीलता से बर्दाश्त करती हैं कि उनकी प्रशंसा करनी पड़ती है

थॉमस कोर्यत (1612 -17 ई.)

यह थॉमस रो के साथ जहाँगीर से मिला । इसने जहाँगीर के झरोखा दर्शन, तुलादान व मीना बाजार का वर्णन किया है ।

सर थॉमस रो (1615- 1619 ई.)

यह जहाँगीर के काल में आने वाले दुसरे शिष्ट मंडल के नायक और अपने गुरु टेरी के साथ भारत आया और 1 साल तक आगरा में रुका । जहाँगीर के साथ शिकार खेलने गया तथा बादशाह के जन्मोत्सवों में दो बार आगरा व मांडू में शामिल हुआ । वह मुग़ल दरबार व जहाँगीर की अभिरुचियों के बारे में लिखा है । उसने जयपुर के निकट टोडा नामक जगह पर जहाँगीर से एक साधू से भेंट का उल्लेख किया है । इसने खुसरों के विद्रोहों व नूरजहाँ गुट का उल्लेख किया है । 3 वर्ष यह मुग़ल दरबार में रहा । वह यह जहाँगीर से आश्वासन लेकर इंग्लैण्ड लौटा कि इसी प्रकार अंग्रेजों का मुग़ल दरबार में स्वागत किया जाता रहेगा

वह जहाँगीर से विशेषाधिकार पाने में सफल रहा तथा जहाँगीर ने उसे खांन की उपाधि दी उसका यात्रा संस्मरण है – "पूर्वी द्वीपों की यात्रा"

एडवर्ड टेरी (1616 -19 ई.)

यह टॉमस रो का पादरी था और उसी के साथ भारत आया । पहले यह मांडू से अहमदाबाद आया । मालवा व गुजरात का इसने विशेष उल्लेख किया है । मुल्तान का वर्णन करते हुए वह लिखता है कि वहाँ अच्छे तीर कमान बनते थे जिन्हें सींगों से बनाया जाता था। तीर सरकंडो व बेंत से बनाए जाते थे और इतने सुंदर तीर कमान भारत में और

कहीं नहीं बनते हैं। मांडू में वह पहली बार जहाँगीर को देखा – वह लिखता है कि बादशाह में क्रूरता और विनम्रता का अजीब विरोधाभास है। वह विपरीत गुणों का मिश्रण है। वह अपनी मां का बहुत आदर करता था और उसके प्रति कर्तव्य निष्ठ रहता था।

अकबर के विषय में लिखता है – बादशाह कहीं भी रहे उसके लिए गंगाजल की व्यवस्था की जाती थी । गंगाजल लाने के लिए उसने अनेक कर्मचारी नियुक्त किए थे । गंगाजल सुंदर ताम्बे के बर्तनों में लाया जाता था । ताम्बे के घड़ों के अन्दर कली की गयी होती थी और पानी भरने के बाद उसे अच्छी तरह सील बंद किया जाता था।

उसने तत्कालीन सिक्कों के आकार-प्रकार और उनके मूल्यों का विवरण भी दिया है – यहाँ के सिक्के दुनियां के किसी भी सिक्कों से शुद्ध होते हैं और सिक्का रुपया कहलाता है। उसने गुजरात में प्रचलित महमूदी नामक सिक्के का भी उल्लेख किया है जिसका मूल्य 2 पैंस के बराबर था चांदी के बारे में वह लिखता है- जैसे तमाम नदियाँ सागर में आकर गिरती हैं वैसे ही तमाम दुनियां की चांदी शाही खजाने में आकर गिरती है और वहीँ ठहर जाती है । उसने मुग़ल छावनी व अस्त्र- शस्त्रों का भी वर्णन किया है । वह लिखता है – लोगों की भाषा अरबी व फारसी मिश्रित थी जिसे हिन्दवी कहा जाता था । राज दरबार की भाषा थी फ़ारसी और विद्वानों की भाषा थी अरबी।

फ्रांसिसको पल्सार्ट (1620-27)

यह एक डच गुमाश्ता था जो जहाँगीर के काल में आया । आगरा में डच टकसाल का अध्यक्ष था । इसने भारत की सामजिक व आर्थिक परिस्थिति का रोचक वर्णन किया है जो उसके अनुभवों व निरिक्षण पर आधारित है । उसने आगरा शहर का बहुत ही रोचक वर्णन किया है और शहर की बनावट, खान –पान , रहन-सहन का उल्लेख किया है । इसने बयाना व अन्य जगहों के नील उत्पादन के विषय में लेख लिखा है । इसने यह टिप्पड़ी की है कि नूरजहाँ ने अपनी छवि और प्रतिष्ठा बढाने के लिए पूरे राज्य में जगह-जगह विहार, उद्यान, महल व सरायें बनवाई।

पित्रेया देला वाले (1623-26 ई.)

यह एक इटावली यात्री था जो सूरत आया । इसने खम्भात (कैम्बे), अहमदाबाद, चौल, गोवा, इकड्डी, मंगलूर और कालीकट की यात्राएं की । इसने मुग़ल भारत के केवल 3 शहरों सूरत, अहमदाबाद और खम्भात को देखा । सूरत का चुन्गीघर दोगाना कहा जाता था जहा के अधिकारी हर माल की सावधानी से जांच करते थे । उसने अहमदाबाद के कारवां – सरायों का वर्णन किया है – अहमदाबाद की सराए फारस व तुर्किस्तान की सरायों से भिन्न थीं । उसने भारत की धार्मिक सहिष्णुता व सती प्रथा का भी उल्लेख किया है ।

निष्कर्ष

भारत में अंग्रेजी शासन की शुरुआत मुख्यतः जहाँगीर की देन है । जहाँगीर के अनुमति के बाद ही यहाँ अंग्रेज काबिज होने लगे और धीरे-धीरे भारत को पूर्ण रूपेण गुलाम बना लिया था । यह रक नकारात्मक ऐतिहासिक विकास तो था ही लेकिन साथ ही साथ मुग़ल भारत की शानोशौकत को पूरी दुनियां के समक्ष लाने व प्रकाशित करने का श्रेय भी इन्ही यूरोपीय यात्रियों व इतिहासकारों को जाता है । इनके एकाउंट से हमे मुग़ल इतिहास का एक निरपेक्ष स्वरूप ज्ञात होता है जो ऐतिहासिक रूप से बहुमूल्य है ।

रेफरेंस

1. *Bernier, Francois (1891). Travels in the Mogul Empire, A.D. 1656–1668. Archibald Constable, London.*
2. Jackson, A.V. et al., eds. *History of India* (1907) v.9. Historic accounts of India by foreign travellers, classic, oriental, and occidental, by A.V.W. Jackson
3. *Richards, John F. (1996). The Mughal Empire. Cambridge University Press.*

4. *Majumdar, Ramesh Chandra (1974). The Mughul Empire. B.V. Bhavan.*
5. Richards, John F. *The Mughal Empire* (The New Cambridge History of India) (1996)
6. *Chaudhuri, K. N. (1978), "Some Reflections on the Town and Country in Mughal India", Modern Asian Studies, Cambridge University Press, **12** (1): 77–96, JSTOR*
7. Habib, Irfan. *Atlas of the Mughal Empire: Political and Economic Maps* (1982).
8. Habib, Irfan. *Agrarian System of Mughal India* (1963, revised edition 1999).